Roll. No. : .....

S-30319

M.A. (Third Semester)

Examination, 2022-23

SANSKRIT

[Paper - I]

[गद्यकाव्य]

Time : 2½ Hours] **[Maximum Marks : 80**

नोट : इस प्रश्न-पत्र में दो खण्ड हैं। खण्ड 'अ' तथा खण्ड 'ब'। खण्ड 'अ' तथा खण्ड 'ब' दोनों से कुल चार-चार प्रश्नों के उत्तर दीजिये। सभी प्रश्नों के उत्तर दी गयी उत्तर पुस्तिका में ही दीजिए। अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका नहीं दी जायेगी/प्रयोग नहीं की जाएगी।

खण्ड–अ

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×5=20

1. कादम्बरी कथा का मूल स्रोत क्या है?
2. कादम्बरी के आधार पर 'विन्ध्याटवी-वर्णन को सार-रूप में लिखिये।

3. अधोलिखित श्लोक का अर्थ लिखियेः—

   सुभाषिततं हारि विशत्यधोगलान्नदुर्जनस्यार्करिपोरिवामृतम्।
   तदेव धत्तेत हृदयेन सज्जनो हरिर्महारत्नमिवातिनिर्मलम् ॥

4. निम्नलिखित श्लोक का आशय स्पष्ट कीजिएः—

   हरन्तिकं नोज्जवलदीपकोपमैर्नवैः पदार्थैरूपपादिताः कथाः।
   निरन्तरश्लेषघनाः सुजातयो महास्रजश्चम्पककुड्मलैरिव ॥

5. कादम्बरी कथा के आधार पर विवेचन कीजिए।
6. 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' का विवेचन कीजिए।
7. संस्कृत के प्रमुख गद्यकारों की प्रमुख रचनाओं पर प्रकाश डालिए।
8. कथा एवं आख्यायिका में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

खण्ड–ब

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : कुल चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 9 अनिवार्य है। 4×15=60

9. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की ससंदर्भ व्याख्या कीजिएः—

   (अ) सत्यपि रूपविलासोपहसितरतिविभ्रमे लावण्यवति विनयवत्यन्वयवति हृदयहारिणि चावरोधजने, स कदाचिदनवरतदोलायमानरत्नवलयो धर्धरिकास्फलानप्रकम्पझणझणायमानमणिकर्णपूरः, स्वयमारब्ध मदंगवाद्यसङ्गीतक प्रसंगेन, कदाचिद विरलविमुक्तशरासारशून्यीकृतकाननो मृगयाव्यापारेण,

कदाचिदाबद्धविदग्धमण्डलः काव्यप्रबन्धरचनेन, कदाचिच्छास्त्रलापेन, कदाचिदाख्यानकाख्यायिकेतिहासपुराणाकर्णनेन, कदाचिदालेख्यविनोदेन, कदाचिद्वणिया, कदा चिद्दर्शनागतमुनिजनचरणशुश्रूषया, कदाचिदक्षरच्युतकमात्राच्युतकबिन्दुमतीगूढचतुर्थपादप्रहेलिकाप्रदानादिभिः, वनितासम्भोसुखपराङ्मुखः सुहृत्परिवृतो दिवसमनैषीत् ।

(ब) क्वचिदमरपतितनुखि नेत्रसहस्रसङ्कला, क्वचिन्नारायणमूर्तिरिव तमालनीला, क्वचित्पार्थरथपताकेव वानराक्रान्ता, क्वचिद्विराटनगरीव कचिकशतावृता, क्वचिदम्बरश्रीरिव व्याधानुगम्यमानतरलतारकमृगा, क्वचिदगृहीतव्रतेव दर्भचीरजटावल्कलधारिणी, अपरिमितवहलपत्रसञ्चयापि सप्तपर्णभूषिता, क्रूरसत्त्वापि मुनिजनसेविता पुष्पवत्यपि पवित्रा विन्ध्याटवी नाम ।

(स) अधुनाापि यत्र जलधरसमये गम्भीरमभिनवजलधरनिवहनिनादमाकर्ण्य भगवतो रामस्य त्रिभुवनविवरव्यापिनश्चापघोषस्य स्मरतो न गृहणन्ति शष्पकवलमजस्रमश्रुजललुलिदीनदृष्टेयो वीक्ष्य शून्या दशदिशो जराजर्जरितविषाणकोटयो जानकीसंवर्द्धिता जीर्णमृगाः । यस्मिन्ननवरतमृगयानिहतशेषवनहरिणप्रोत्साहित इव कृतसीताविप्रलम्भः कनकमृगो राघवमतिदूरं जहार ।

10. महाकवि बाणभट्ट के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवेचन कीजिए ।

11. कादम्बरी में प्रयुक्त भाषा-शैली एवं रस-योजना पर प्रकाश डालिये ।

12. शूद्रक का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

13. महाकवि बाण की काव्यगत विशेषताओं का निरूपण कीजिए ।

14. कादम्बरी कथा के स्त्री-पात्रों के चरित्र की विशेषताओं का निरूपण कीजिए ।

15. 'कादम्बरी एक कथा है'— कादम्बरी कथा-मुख के आधार पर सिद्ध कीजिए ।

16. संस्कृत गद्य साहित्य के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए ।

****